Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

'भारतीय संस्कृति की विकास यात्रा'

निकिता कुमार*

'संस्कृति' शब्द 'संस्कार' से बना है। संस्कार का अर्थ है 'शुद्धि की क्रिया।' संस्कृति का सम्बन्ध उन सभी कार्यों, विचारों एवं व्यवहारों से है जो व्यक्ति का परिष्कार करें, उसे शुद्ध बनायें। संस्कृति का अर्थ है, विभिन्न संस्कारों द्वारा सामूहिक जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति। यह परिमार्जन की एक प्रक्रिया है। संस्कारों को सम्पन्न करके ही मानव एक सामाजिक प्राणी बना है। समाजशास्त्र में संस्कृति का अर्थ मानव जाति के रहन–सहन, आचार–विचार, भावनाएँ विश्वास और विचारों के समग्र रूप से है। यह उन सभी बातों की ओर निर्दिष्ट करती हैं, जिन्हें मनुष्य ने सामाजिक प्राणी होने के कारण अर्जित किया है। यह केवल मनुष्य में ही पायी जाती है, अन्य प्राणियों में नहीं।[1]

प्रारम्भ में मानव जीवन बहुत कठिन था। मानव को अपनी छोटी–छोटी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकृति पर निर्भर होना पड़ता था। उस समय मानव संस्कृति का जन्म नहीं हुआ था। धीरे–धीरे मानव ने अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जो कुछ सीखा और विकास किया, भौतिक और अभौतिक दोनों ही क्षेत्रों में, उसे ही संस्कृति कहते हैं।

संस्कृति को लेखकों द्वारा विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है– कैसिरर जैसे दार्शनिक एवं सोरोकिन जैसे समाजशास्त्री ने संस्कृति को व्यक्ति की नैतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक उपलब्धियाँ बताया है। टेलर पहले मानव विज्ञानी थे जिन्होंने संस्कृति को परिभाषित करते हुए इसका व्यापक रूप बताया है। उनके अनुसार धारणा, विचार, प्रथा, कानून, नैतिक, कला और दूसरी क्षमताओं एवं समाज के सदस्य के रूप में अर्जित कौशल को संस्कृति कहते हैं।[2]

संस्कृति किसी समाज में पायी जाने वाली वह उच्चतम मूल्यों की चेतना है जो सामाजिक प्रथाओं, व्यक्तियों के विचार, भावनाओं, मनोवृत्तियों, आचरण के साथ–साथ भोतिक पदार्थों के स्वरूप में अभिव्यक्त होती हैं। किसी भी समाज में संस्कृति के निर्माण में उस समाज का धर्म और सभ्यता का विशेष स्थान है। जहाँ धर्म आंतरिक अनुभूतियों के महत्त्व को प्रकट करता है। धर्म स्वयं में एक संस्कृ ति हे। भारत में धर्म संस्कृति की मूल आत्मा कही जा सकती है। जिसमें जीवन के अर्थ और उद्देश्य का ज्ञान होता है किन्तु जब वास्तविक धर्म का ह्रास (गिरावट) हेाता है तब वह सारहीन बन जाता है, तब अक्सर संस्कृति का टकराव होता है।

संस्कृति को कभी–कभी सभ्यता के रूप में भी देखा जाता है किन्तु संस्कृति के उच्चतम स्वरूपों के अर्थों में। वास्तविकता में यह वह स्थिति है जिसमें नगरों का विकास होता है और उच्च श्रेणी के भौतिक जीवन या उच्च जीवन स्तर के प्रतीक बन जाते हैं। किन्तु उच्च स्तर के भौतिक जीवन में संस्कृति का अंश तभी आता है जब वह उच्च नैतिक मूल्यों को प्राप्त करने का कोई माध्यम बने। नैतिक मूल्यों में से किसी एक के भी प्रतिकूल होने पर वह सांस्कृतिक विकास में बाधक होती है। सांस्कृतिक विकास के क्रम में किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह में सर्वोच्च सत्ता से प्राप्त होने वाले अंतर्ज्ञान, प्रेरणा का रहस्यात्मक अनुभूतियों के द्वारा उच्चतम मूल्यों या विचारों की दृष्टि से एक समूह का आदर्श बन गया जो बाद में किसी मानसिक भौतिकवादी लक्षणों के रूप में संस्कृति का रूप बन गया।

भारत के प्राचीनकाल से विभिनन मतभेदों के बावजूद भारतवासियों के विचारों, भावनाओं, रहन–सहन के तरीकों में एक बुनियादी एकता है, जो राजनीतिक परिवेश में बढ़ने से घटती–बढ़ती है, किन्तु समाप्त नहीं होती। बहुत से लोग जो दूसरे देशों से भारत आये और मूल निवासियों के साथ

*शोध छात्रा, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

हजारों वर्षों तक साथ रहे, जिससे आपस में उनकी संस्कृति, आचार–विचार, रीति–रिवाज़, पहनावा, खान–पान आदि का भारतीय संस्कृति पर मिश्रित प्रभाव पड़ा। भारत की राष्ट्रीय संस्कृति में यह दो तत्त्व निहित हैं– समान प्रकृति एवं समान दृष्टिकोण। इनमें वह संस्कृतियाँ शामिल हैं जो प्रागैतिहासिक काल में विद्यमान थीं। वह जिनका देश के साथ अस्थायी सम्बन्ध रहा, वह जो बाहर से आयीं और भारत में अपना घर बना लिया तथा अंत में वह क्रांतिकारी बौद्धिक आंदोलन जो आप से आप स्वयं, समय–समय पर देश में उत्पन्न हुए है।

सिन्धु सभ्यता का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर स्पष्ट पड़ा क्योंकि जब सिन्धु घाटी सभ्यता अपने अंतिम पड़ाव में थी तब द्रविड़ संस्कृति का उदय हो रहा था और दोनों का परस्पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस प्रकार सिन्धु घाटी सभ्यता का भारतीय संस्कृतिपर प्रभाव द्रविड़ संस्कृति के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है। उत्तर पश्चिम में सिन्धु घाटी सभ्यता के विनाश के बाद अप्रवासी आर्यों ने एक नई संस्कृति की नींव रखी। वह उत्तर पश्चिम से भारत आये थे। तत्पश्चात् एक अन्य 'राष्ट्रीय संस्कृति विकसित हुई जो सांस्कृतिक जीवन की मुख्यधारा के रूप में चलती रही। यद्यपि आगे की आठ शताब्दियों में धार्मिक और दार्शनिक विचारों की नयी धारणाओं का उदय हुआ जिनमें से बौद्धमत, जैनमततथा हिन्दु दर्शन की छः शाखाएँ यहाँ वर्णन करने योग्य हैं। बौद्धमत से देश के बहुत बड़े हिस्से में लोगों के जीवन और विचारों में ऐसा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया कि वह एक अलग करीब–करीब स्वतंत्र संस्कृति के रूप में विकसित हुई।[3]

बौद्ध धर्म में सामाजिक समानता की बात की गई है। शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है एवं पालि भाषा का विकास हुआ। इसके पश्चात् कई साम्राज्य विकसित हुए जिनसे संस्कृति का आदान–प्रदान हुआ किन्तु भारतीय संस्कृति पर सबसे ज्यादा प्रभाव मुगलों का पड़ा।

मुगलों ने अति परिष्कृत मिश्रित हिन्दी–फारसी संस्कृति को विकसित किया। भारतीय उपमहाद्वीप के लिए मुगलों का प्रमुख योगदान उनकी अनूठी वास्तुकला थी। मुगलकाल के दौरान मुस्लिम सम्राटों द्वारा ताजमहल सहित कई स्मारक बनाए गए थे। मुस्लिम मुगल राजवंश ने भव्य महलों, कब्रों, मीनारों और किलों को निर्मित किया था। भारत के इतिहास में दूसरों की तुलना में मुगलकाल ने भारतीय, ईरानी और मध्य एशिया के कलात्मक, बौद्धिक और साहित्यिक परम्परा का एक और अधिक उपयोगी सम्मिश्रण देखा। भारतीय उपमहाद्वीप की दोनों हिन्दू और मुस्लिम परम्पराओं, संस्कृति और शैली पर भारी प्रभाव पड़ा था।

भारत ही एकमात्र ऐशा देश है जहाँ पर गंगा–जमुनी संस्कृति देखने को मिलती है। यह एक धर्म–निरपेक्ष राज्य है, जहाँ पर 'अतिथि देवो भवः' एवं 'वासुदेव कुटुम्बकम' की संस्कृति है। यहाँ धर्म से ऊपर मनुष्य है। भारत में हर धर्म का व्यक्ति होली, दीपावली, क्रिसमस, ईद साथ मनाते हैं। भारत में किसी भी धर्म के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बनते हैं। यहाँ की संस्कृति सबको साथ लेकर चलने की है। अतः आज भारत की पहचान विश्वपटल पर है।

भारत में अंग्रेजों के शासनकाल को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। भारत में अंग्रेजी शासन का सार्थक प्रभाव पड़ा। उस समय अंग्रेजों द्वारा भारत में एक दृढ़ केंद्रीय सरकार के अधीन राजनीतिक एकता स्थापित करना बड़ी उपलब्धि थी। अंग्रेजों ने भारत के भू–भाग को एक सीमा के अन्दर लाकर खड़ किया। देश की राजनीति में अंग्रेजों ने स्थिरता और शांति भी स्थापित की और उनके पास एक केन्द्रीय सेना भी तैयार थी जो पूर्ण अनुशासित थी। शिक्षा का विकास हुआ और समाचार पत्रों का प्रकाशन शुरू हुआ। अंग्रेजों ने पूरे देश में एक शासन प्रणाली अपनायी और अपनी सुविधा के लिए भारत में एक सड़क, रेल और डाक–तार विभाग को बड़े पैमाने पर विकसित किया। इससे देश में आवागमन सुलभ हुआ और लोग एक दूसरे के करीब आए तथा राष्ट्रीयता का फैलाव हुआ।

स्वतंत्रता पश्चात् आधुनिक भारत में दो ऐसी प्रक्रियाएँ चल रही हैं जिन्होंने समाज, व्यवस्था और संस्कृति को काफी कुछ अंशों में प्रभावित किया है। यह प्रक्रियाएँ (1) संस्कृतिकरण और (2) आधुनिकि करण हैं। इन्होंने भारतीय संस्कृति व जीवन–मूल्यों को प्रभावित करने की दिशा में योग दिया है।